Baba’s Praise

02/7/2015

- प्रभू वा ईश्वर कहने से वह बाप का लव नहीं आता है। बाप से तो बच्चों को वर्सा मिलता है। यहाँ तो तुम बाप के सामने बैठे हो।
- वह कहते हैं मैं परम आत्मा यानी परमात्मा तुम्हारा बाप हूँ।फिर मुझ परम आत्मा का ड्रामा अनुसार नाम रखा हुआ है शिव।
- आत्मा को ज्ञान का तीसरा नेत्र मिलता है। देने वाला है बाप।
- बैठ अमरकथा सुनाई। यह कथायें आदि जो बनाई हैं - यह भी ड्रामा में नूँध हैं। फिर भी होगा।
- बाप आकर तीसरा नेत्र देते हैं जिसका कोई को पता नहीं है सिवाए तुम्हारे। ज्ञान का तीसरा नेत्र नहीं है तो कहेंगे चूँचा, धुंधकारी।

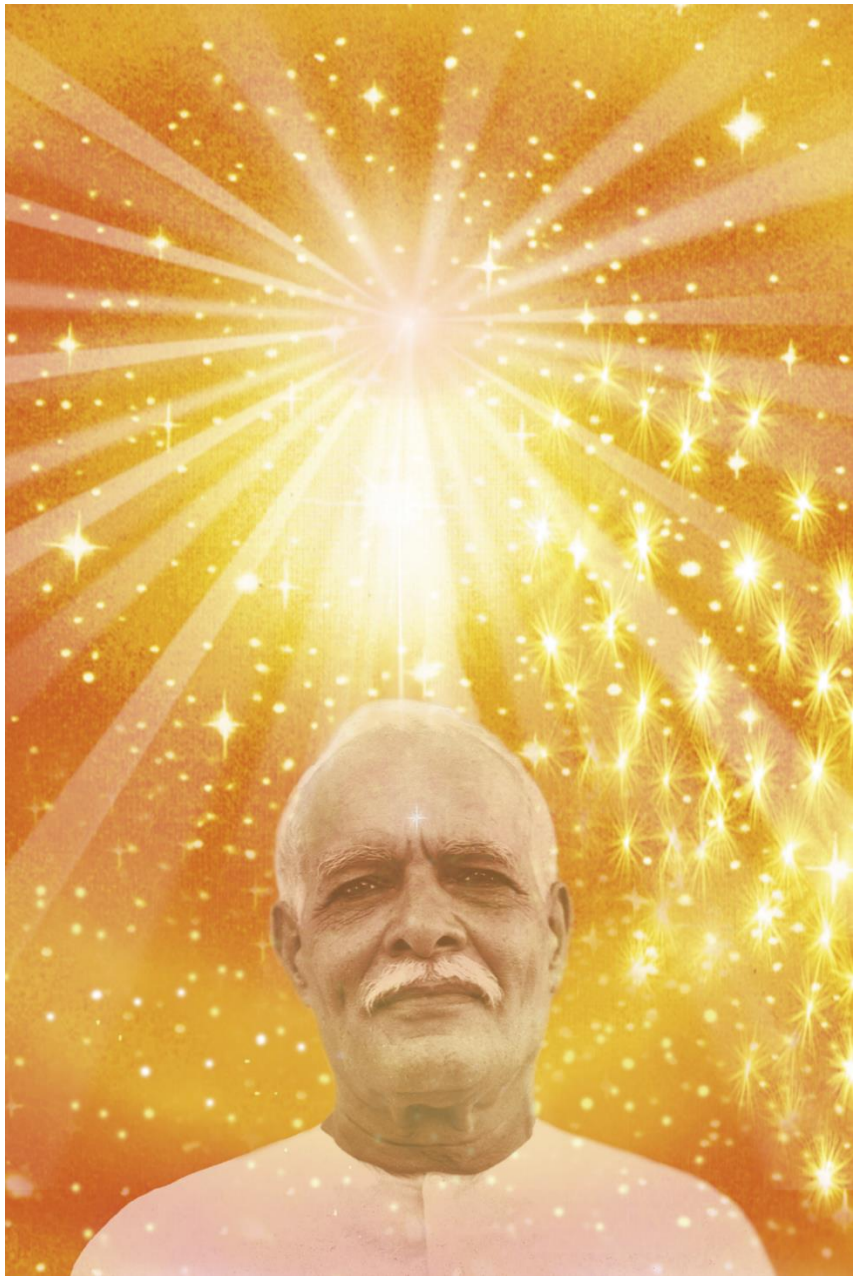

- बाप कहते हैं मैं ही पतित-पावन हूँ। तुम्हारी आत्मा और शरीर दोनों पतित हैं। अब पावन बनना है।
- बच्चे जानते हैं बाप बिन्दी है। ज्ञान का सागर है। वह तो कह देते नाम-रूप से न्यारा है। अरे, ज्ञान का सागर तो जरूर ज्ञान सुनाने वाला होगा ना। इनका रूप भी लिंग दिखाते हैं फिर उनको नाम-रूप से न्यारा कैसे कहते! सैकड़ों नाम रख दिये हैं।
- बच्चों की बुद्धि में यह सारा ज्ञान अच्छी रीति रहना चाहिए। कहते भी हैं परमात्मा ज्ञान का सागर है। सारा जंगल कलम बनाओ तो भी अन्त नहीं हो सकता है।